आरएनआई नं. . RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. . RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस, उदयपुर
प्रेषण दिनांक -प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 10 • अंक-2576 • उदयपुर, गुरुवार 13 जनवरी, 2022 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

तीन ऑपरेशन के बाद चल पड़ा प्रीत

खेती करके जीवनयापन करने वाले सूरत गुजरात निवासी अजय कुमार पटेल के घर 11 वर्ष पहले प्री मैच्योर बेबी प्रीत का जन्म हुआ। जन्म के 6 माह तक बेबी को नियोनेटल इंटेंसिव केयर यूनिट में रखा गया। गरीब सिान अजय दुःख के तले कर्जदार भी हो गया पर कर भी क्या सकता था। सामान्य हालात होने पर गुजरात के सूरत, राजकोट और अन्य शहरों के प्रसिद्ध हॉस्पीटल्स में दिखाया पर कहीं पर भी उसे ठीक होने का भरोसा नहीं मिला। घर के पड़ोस में रहने वाले राजस्थान निवासियों ने अजय को नारायण सेवा में जाने की सलाह दी। पहली बार 2019 में दिव्यांग प्रीत को लेकर परिजन उदयपुर आए डॉक्टर्स ने ऑपरेशन के लिए परामर्श दिया और एक ऑपरेशन कर दिया। बच्चे का पांव सीधा हो गया। दूसरी बार फरवरी 2020 में संस्थान आये तब उसके दूसरे पांव का ऑपरेशन किया गया। दोनों पांवों के ऑपरेशन के बाद प्रीत वॉकर के सहारे चलने लग गया। इसे देख परिजन पुनः अक्टूबर 2020 में उसे संस्थान में लेकर आए तब तीसरा ऑपरेशन हुआ। अब प्लास्टर खुल चुका है... केलीपर्स व जूते पहनने के बाद प्रीत अपने पांव चलने लगा है। अब वह और उसके परिजन प्रसन्न हैं।

सीमा हुई असीम

महज पाँच साल की उम्र और पोलियो का अटैक। बस तब से बैशाखी ही उसका सहारा है। नाम सीमा रावत है। ग्राम निरावली, जिला ग्वालियर की रहने वाली। ये सीमा है जिसके जीवन में दुःखों की कोई सीमा नहीं। नारायण सेवा संस्थान ने उसका निःशुल्क ऑपरेशन करके उसको चलने लायक बनाया और सहारा दिया। उसकी काबिलियत बढ़ाई वो कहती है– वहां से आकर में अच्छे से चल सकती हूँ। दो महीने रहकर वहां सिलाई का कोर्स किया था।

संस्थान ने सीमा को सिलाई का प्रशिक्षण और एक सिलाई मशीन निःशुल्क दी। अब वो इतना पैसा कमा लेती है कि अपना खर्चा उठा सके।

माता– पिता कहते है बच्ची– जो वो कर सकती है, वो सीखा आयी है, वहां जा के बहुत खुशी मिली है। हमारी बच्ची की शादी हो चुकी है, ससुराल जाएगी तो वहां भी मदद मिलेगी थोड़ी बहुत और हमारी बच्ची अपने पैरो पे खड़ी है। सीमा जब अपना बचपन याद करती है तो उसका मन दुःखी हो जाता है।

कहती है– जब मैं पाँच साल की थी तब मुझे याद नहीं है कि मेरा पैर ऐसे– कैसे हुआ है? मेरे साथ ही लड़कियाँ थी वो चलती थी। वो कहीं भी जाती थी तो मेरा भी मन होता था। मुझे भी ऐसा लगता कि, मैं काश ठीक होती ऐसा करती। तब हम पे बहुत गरीबी थी। दूसरे के यहाँ पैसे लेने गई उसकी मम्मी तो उसने मना कर दिया। एक बच्ची, वो भी भगवान ने ऐसी कर दी विकलांग। अगर सही होती तो हमको ऐसे हाथ नहीं जोड़ना पड़ता किसी के। पिता – माता को तो बहुत ज्यादा दुःख होता है। मुझे बहुत खुशी है कि अपने पैरो पे खड़ी हो गई।

उसे मिल गया अपने हिस्से का मुट्ठी भर आसमान अपनी सीमा का विस्तार। दिल से कहा धन्यवाद, नारायण सेवा संस्थान।

दिव्यांगों के हित में दिव्य संकल्प

विजन डॉक्यूमेंट में वर्ष 2022 के अन्त तक दुर्घटनाग्रस्त दिव्यांगों के लिए उदयपुर में सेंट्रल फेबिक्रेशन यूनिट स्थापित किया जाना भी शामिल है। इससे प्रतिदिन सैकड़ो दिव्यांगग्रस्त व अंगविहिन जनों को अत्याधुनिक सुविधाजनक कृत्रिम हाथ–पैर मिलने लगेंगे।

संस्थान इसके माध्यम से भारत भर के 50 हजार दिव्यांगों को प्रतिवर्ष मदद पहुंचा सकेगा। संस्थान के वर्तमान सेवा कार्यों की जानकारी देते हुए सेवा प्रशांत जी मैया के सानिध्य में जयपुर में व निदेशक श्रीमती वंदना जी अग्रवाल वे सानिध्य में उदयपुर मुख्यालय पर बड़ी संख्या में जरूरतमंदों को ट्राइसाइकल, व्हीलचेयर व सहायक उपकरण बांटे गए तथा 40 को कृत्रिम अंग लगाए गए। संस्थान की सूरत, हैदराबाद, लखनऊ, मथुरा, बड़ौदा, अहमदाबाद, मुंबई, लुधियाना, दिल्ली, नागपुर सहित 22 शाखाओं में भी इस प्रकार के कार्यक्रम आयेजित हुए और वहां के जिला प्रशासनिक अधिकारियों से भेटकर दिव्यांगता के क्षेत्र में विशेष कार्य करने की पहल की गई।

दिव्यांगों की सेवाओं में सोशल कॉरपोरेट रिस्पॉनिसबिलिटी के तहत ए. आर. टी. हाउसिंग एवं राइसो इंडिया लिमिटेड ने भी अपना सहयोग प्रदान किया।

प्रसन्नता है प्रेम का झरना : कैलाश मानव

आज की कथा, अपने भाव अच्छे करने की कथा। भाव, वाणी और कर्म की। भगवान महावीर स्वामी के समय में किसी ने पूछा कि, एक राजा खड़े–खड़े तप रहा है, तपस्या कर रहा है। राज– काज सब छोड़ दिया। सब बेटे–बेटी को सौंप दिया। जिनको सम्भलाना था सम्भला दिया, मन्त्रियों को। और खड़े–खड़े तपस्या कर रहा है। अभी वो मर जाये तो क्या होगा, उसकी गति कैसी होगी ? भगवान महावीर स्वामी ने अपने चित्त बोधि से, ये विकसित हो जाती है। लेकिन ये चित्त बोधि से हम दूसरे के चित्त को देख लें, ये विकसित करना हमारा लक्ष्य नहीं है। हमारा लक्ष्य है अपने चित्त को देखना। आप दीपक खुद को बनना, विकार खुद को छोड़ना। दूसरे के मन में क्या चल रहा है ? देखने से क्या मिलेगा ? लेकिन भगवान महावीर स्वामी तो बड़े तीर्थंकर थे। हाँ, जिनके लिये कहते थे ना अरिहन्त। जिन्होंने अपने दुष्मनों का, अपने क्रोध का , कशायों का कान के छेद में कुछ गोप दिया, तकलीफ दे दी, तो भी उसको माफ कर दिया। ऐसे महान थे। इसलिये चित्त बोधि से राजा के चित्त बोध को देख के बोले – भई, अभी इसकी मृत्यु हो जाये तो, गति अच्छी नहीं होगी। और आठ घण्टे बाद कोई दौड़ा–दौड़ा आया। महाराज वो राजा तो मर गया। भगवान महावीर स्वामी ने कहा–आहा, गति हो गयी उसकी, अच्छी गति हो गयी। महाराज छः घण्टे पहले, आठ घण्टे पहले आप कहते थे। भगवान महावीर स्वामी ने समझाया–उस समय इसके मन में विचार आ रहा था। कुछ दुष्मनों ने आक्रमण कर दिया है। राज भले ही मैंने बेटे–बेटी को दिया हो, मन्त्री को दे दिया हो। लेकिन वो राज्य की तरफ बढ़ रहा है–दुष्मन तो। उसके मन में बहुत क्रोध आ रहा था। तो भई अंतमति सो गति। अपन ने सुना है। तो उस समय क्रोध में मृत्यु हो जाती तो गति अच्छी नहीं होती ना ? फिर उसने अपने भावों को पुष्ट किया।

सम्पादकीय

साधना, पूजा तथा ईश्वर भक्ति के लिये हमारा सारा जोर कर्मकाण्ड, मंत्र या पूजा–पद्धति पर रहता है। यह विधान भी है। किन्तु यदि मन में खोट है तो ये सारे उपक्रम निरर्थक हैं। पुण्य के बजाय पाप ही होना है।

परमात्मा को पाने की प्रथम शर्त ही है कि मन की निर्मलता। प्रभु राम ने तो मानस में कहा भी है – 'निर्मल मन जन सो मोही पावा। मोही कपट छल छिद्र न भावा।' इसलिये क्रियाओं का, पद्धतियों का, मंत्रों का अपना महत्व है किन्तु यदि मन में कोई अपेक्षा है या दूसरों के प्रति ईर्ष्या है तो वे सब निष्फल ही होने हैं।

मन की खोट को दूर करने के लिये ही तो व्यक्ति भक्ति–मार्ग का राही बनता है। यदि वह राही होकर भी खोट को ही अपनाये रहे तो फिर कैसे सफलता मिलेगी? मन की खोट को समाप्त करने के लिये अनेक महापुरुषों ने उपाय बताये हैं। इन सबमें से सरलतम उपाय है – सेवा। सेवा करने से अपने जीवन की महत्ता तो समझ में आती ही है किन्तु साथ–साथ मन भी निर्मल होता है। सेवा भी ईश्वरीय भक्ति ही है। सेवा द्वारा मन निर्मल होगा तो परमात्मा प्राप्ति तो होनी ही है।

कुछ काव्यमय

मन में तो भरी है खोट।
दूसरों को पहुँचा रहे चोट।
और भक्त होने का दावा है।
यह तो खुद से छलावा है।
मन की निर्मलता प्रभु से मिलायेगी।
यही मानव का दर्जा दिलायेगी।

- वरदीचन्द राव

अपनों से अपनी बात

देने का आनंद

एक बार एक गुरु, अपने एक युवा शिष्य के साथ टहलने निकले। उन्होंने देखा कि रास्ते में पुराने हो चुके एक जोड़ी जूते उतरे हैं, जो सम्भवतः पास के खेत में काम कर रहे गरीब मजदूर के थे, जो अब अपना काम खत्म कर घर वापस जाने की तैयारी कर रहा था। शिष्य को मजाक सूझा, उसने शिक्षक से कहा, "गुरुजी, क्यों न हम ये जूते कहीं छिपा कर झाड़ियों के पीछे छिप जाएँ, जब वह मजदूर इन्हें यहाँ नहीं पाकर घबराएगा तो बड़ा मजा आएगा।"

गुरु गम्भीरता से बोला, "किसी गरीब के साथ इस तरह का मजाक करना ठीक नहीं है, क्यों ना हम इन जूतों में कुछ सिक्के डाल दें और छिपकर देखें कि इसका मजदूर पर क्या प्रभाव पड़ता है।" शिष्य ने ऐसा ही किया और दोनों पास की झाड़ियों में छिप गए।

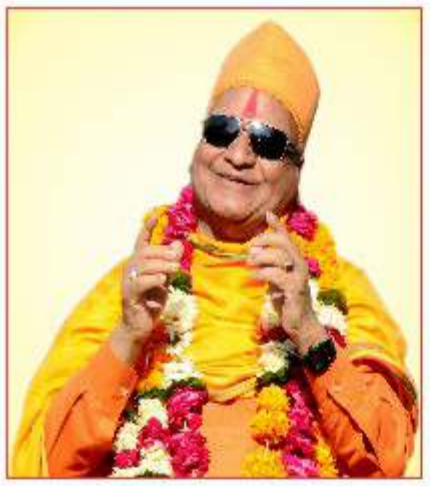

मजदूर जल्द ही अपना काम खत्म कर जूतों की जगह पर आ गया। उसके जैसे ही एक पैर जूते में डाला, उसे किसी कठोर चीज का आभास हुआ। उसने जल्दी से जूते हाथ में लिए और देखा कि अंदर कुछ सिक्के थे। उसे बड़ा आश्चर्य हुआ और वह सिक्के हाथ में लेकर बड़े गौर से उन्हें पलट–पलट कर देखने लगा। फिर उसने इधर–उधर देखा। दूर–दूर तक कोई नजर नहीं आया तो उसने सिक्के अपनी जेब मे डाल लिए। अब उसने दूसरा जूता उठाया, उसमें भी सिक्के पड़े थे। मजदूर भाव–विभोर हो गया। उसकी आँखों में आंसू आ गए। उसने हाथ जोड़कर ऊपर देखते हुए कहा, "हे भगवान ! समय पर प्राप्त इस सहायता के लिए उस अनजान सहायक का लाख–लाख धन्यवाद। उसकी सहायता और दयालुता के कारण आज मेरी बीमार पत्नी को दवा और भूखे बच्चों को रोटी मिल सकेगी।" मजदूर की बातें सुन शिष्य की आँखें भर आईं। गुरु, ने शिष्य से कहा, "क्या तुम्हारी मजाक वाली बात की अपेक्षा जूते में सिक्का डालने से तुम्हें कम खुशी मिली?" शिष्य बोला, "आपने आज मुझे जो पाठ पढ़ाया है, उसे मैं जीवन भर नहीं भूलूँगा। आज मैं उन शब्दों का मतलब समझ गया हूँ, जिन्हें मैं पहले कभी नहीं समझ पाया था कि लेने की अपेक्षा देना कहीं अधिक आनन्ददायी है। देने का आनन्द असीम है देना देवत्व है।"

–कैलाश 'मानव'

भक्ति में अहंकार कैसा?

एक भक्त को रात्रि स्वप्न में भगवान ने कहा कल मैं तुम्हारें घर आऊंगा। भक्त बहुत प्रसन्न हुआ। सुबह उठते ही नौकरानी से घर की अच्छी तरह सफाई करवाई। पत्नी से कहा जब सब कुछ ठीक– ठाक हो गया तो वह घर के द्वार पर बैठ भगवान के आने बाट जोहने लगा। थोड़ी ही देर में चिथड़ों में लिपटा भूखा– प्यासा एक भिखारी द्वार पर आया। भक्त ने यह कहते हुए उसे वहाँ से धकिया दिया कि हटो– हटो! मेरे भगवान आने ही वाले हैं। फिर एक बुढ़िया आई भक्त ने नौकर से कहकर उसे भी वहाँ से भगा दिया। बुढ़िया के

जाते ही एक नंग– धड़ंग मैला– कुचैला बालक उसके सामने आ गया। भक्त को क्रोध आ गया, वह बुदबुदाने लगा.... सभी को आज ही यहाँ मरना था, इन्हीं लोगों की वजह से शायद प्रभु आने में विलम्ब कर रहे हैं।

बच्चें को भी धमकाते हुए उसने दरवाजे से लौटा दिया। सुबह से शाम हो गई पर भगवान नहीं आए। फिर यह सोचकर कि कहीं अटक गए होंगे। वह भोजन करके सो गया। रात्रि में पुनः स्वप्न हुआ।

भगवान ने कहा– भक्तजी! मैं कही नहीं अटकता। मेरे अटकने का मतलब है, सृष्टि का थम जाना। मैं दुःखी, दरिद्र, भूखे और आर्त्त के रूप में आपके द्वार पर आया था। आप ही न पहचान सके तो मैं क्या करू? मैंने कब कहा था कि मैं छत्र–मुकुट धारण किए आऊंगा? मैं दरिद्र नारायण भी तो हूँ। भक्त को अपनी गलती का अहसास हुआ उसे जीवनपर्यन्त अपने द्वार पर आए भगवान के लौट का मलाल रहा।

बंधुओं! परमात्मा ने मनुष्य को ही ऐसा जिससे बुद्धि होती है और बुद्धि में यह सम्भावना होती है कि परमात्मा को पहचान सके। अहंकार, धन, वैभव व भक्ति के गर्व में बुद्धि को गौण बना बैठे तो यह गलती उसी की हुई ना ? भक्त की परीक्षा लेने की भगवान की अपनी अलग ही कसौटियां है। स्वप्न में भगवान के अपने घर आगमन की सूचना पाने वाले भक्त कि आंखे अहंकार और वैभव में इतनी चुंधियाँ गई कि वे भूल क्योंकि भगवान के प्रति तीव्र अनुराग अथवा अनुरक्ति तथा निष्कपट एकनिष्ठ प्रेम, परोपकार ही सच्ची भक्ति है।

भावना जीवन के फल का निर्धारण करती हैं। भक्ति के फल खिलते हैं। स्वभाव के अनुसार भावना, भावनानुसार कर्म, कर्मानुसार स्वभाव और स्वभाव के आधार पर पुनः भावना निर्मित होती है।

उत्तम कर्म और भावना बुरे कर्म और बुरी भावना को नष्ट कर अतंकरण को पावन करके परमात्मा से जोड़ते हैं। सतपुरूषों की संगति सात्विक भावना के संवर्द्धन में सहायक बनती है। यही सद्भावना जीवन का कल्याण करती है।

अतः हमें प्राणिमात्र के प्रति सद्भावना रखते हुए जो दीन– दुःखी, निराश्रित, अपाहिज, रूग्ण और अनाथ है। उनकी सामर्थ्य अनुसार सहयता करनी चाहिए।

– सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झीनी–झीनी रोशनी से)

कैलाश की तरह कई अन्य लोग भी लोठे से ही स्नान कर रहे थे। एक अधेड़ महिला स्नान करने झील में उतर तो गई मगर बाहर निकलते ही उसे ऐसी कंपकंपी छूटी कि उसकी बोलती बन्द हो गई। उसकी ऐसी दशा देख कर सब चिन्तित हो गये। आसपास कोई अस्पताल भी नहीं था। इन लोगों का जहां ठहराया गया था, वह एक छोटा सा कस्बा था, वहां पूरी सुविधाएं नहीं थी। अस्पताल काफी दूर था, उसे वहां ले जाते उसके पूर्व ही उसकी मृत्यु हो गई। महिला शुरू से उनके साथ थी, नहाने मात्र से उसके इस तरह मृत्यु को प्राप्त हो जाने से पूरे दल में विषाद का वातावरण छा गया, पर कोई क्या कर सकता था।

उसका अन्तिम संस्कार वहीं करना था मगर वहां कोई हिन्दु श्मशान ही नहीं था। सब मिल कर महिला का शव एक पहाड़ी पर ले गये और लकड़ियां जुटा कर उसे अग्नि के हवाले किया। यह भी लोमहर्षक अनुभव था जो कैलाश के स्मृति पटल पर अंकित हो गया।

तीसरे दिन इनका दल कैलाश पर्वत की तरफ अग्रसर हुआ। पूरे रास्ते चढ़ाई ही चढ़ाई थी। यात्री चढ़ते चढ़ते थक जाते तो विश्राम लेने के लिए बैठ जाते। अनन्तः एक जगह ले जाकर इन्हें बिठा दिया और सामने ऊपर की तरफ देखने को कहा। सामने एक त्रिशूलाकार विशाल हिमगिरि था, यही कैलाश पर्वत था। कैलाश इसके दर्शन करते ही सम्मोहित हो गया और मंत्र मुग्ध हो टकटकी लगाये इसकी तरफ देखता ही रहा, जब सुध आई तो नतमस्तक हो इसे प्रणाम किया। पर्वत पर तो कोई जा नहीं सकता, यात्रीगण यहीं हवन–पूजन– पाठ आदि करते हैं। यह एक त्रिशूलाकार हिमनद अर्थात् ग्लेशियर था। पर्वत में जगह जगह खोहें बनी हुई थी, ये प्राकृतिक खड्डे थे, श्रद्धालु इन खोहों को ही पूजा अर्चना के लिये उपयोग में लेते थे। यात्रियों ने अलग अलग खोहें अपने लिये चुन ली। कई लोग अपने साथ घी तथा अन्य हवन–सामग्री लेकर आये थे, उन्होंने यज्ञ शुरू कर दिये। कैलाश को इस बात का भान ही नहीं था इसलिये वह अपने साथ कुछ भी नहीं लाया मगर अन्य यात्रियों द्वारा कराये जा रहे यज्ञों में अपनी आहुति देने में अपना सौभाग्य समझा।

अंग - 207

कौन है दाता

एक संन्यासी आया। नगर में डेरा डाला। वह किसी से कोई भेंट नहीं लेता था। वह बहुत प्रसिद्ध हो गया। राजा ने उसकी गुणगाथा सुनी। उसने सोचा, क्या ऐसा संन्यासी हो सकता है, जो कुछ भी नहीं लेता। यह ढोंग है, माया है। राजा ने उसकी परीक्षा करनी चाही। राजा बहुमूल्य उपहार लेकर संन्यासी के पास गया। संन्यासी आंखें मूंद कर ध्यान कर रहा था। कुछ समय बाद आंखें खोलीं। सामने भेंट में सजाए हुए थाल पड़े थे। संन्यासी को प्रणाम कर राजा बोला– महाराज! मैं आपकी शरण में आया हूं। आप कृपाकर आशीर्वाद दें। मेरे राज्य का विस्तार हो। मेरा भण्डार बढ़े। मेरा परिवार बढ़े। मेरी यश और कीर्ति बढ़े। आप मेरी ये मांगे पूरी करें। मेरी भेंट आप स्वीकार करें। संन्यासी बोला– मैं तुम्हारी भेंट नहीं ले सकता, क्योंकि मैं केवल दाता की भेंट लेता हूं। भिखारी की नहीं। राजा बोला– आपने मुझे पहचाना नहीं, मैं राजा हूं, भिखारी नहीं हूं। संन्यासी ने कहा– अरे, अभी अभी तुम याचना कर रहे थे, मांग कर रहे थे। मांगने वाला दाता नहीं होता, भिखारी होता है।